कलीसिया अध्याय 20

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **1थिस्लुनिकियों 2-5**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (गलातियों 1-4) में शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में मुख्य वचन]* **(7) यूहन्ना 6:37**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) यूहन्ना 6:37। यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों तो क्या वे एक संग चल सकेगें?

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 8:1-59**

परिचय। बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए **यूहन्ना 8:1-59** का अध्ययन करें।

यूहन्ना 8:1-59 में व्यभिचार में पकड़ी गयी स्त्री के लिए यीशु मसीह द्वारा किये गये आग्रह का वर्णन किया गया है। वह अपने बारे में गवाही देता है और लोगों को चेतावनी देता है कि जो कोई उसकी गवाही को अस्वीकृत करेगा वह नरक का भागीदार होगा। अन्त में वह बताता है कि वास्तव में अब्राहम के वंशज कौन हैं।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 8:1-59 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में,समूह के सदस्य अलग अलग बातें साझा करेंगे)

8:30

खोज 1. जो लोग मसीही होने का दावा करते हैं वे यीशु मसीह के दुश्मन बन सकते हैं।

ध्यान दें।

(1) नामधारी मसीही जो यीशु मसीह के दुश्मन बन गये।

यूहन्ना 8:30-32 में हम बहुत से यहूदियों के बारे में पढ़ते हैं जो यीशु पर विश्वास किया करते थे। यीशु ने उनसे कहा कि जब वे उसकी शिक्षाओं में बने रहेगें तो ही वे उसे सच्चे चेले कहलाएंगे और केवल तभी सत्य उन्हें स्वतन्त्र करेगा।

लेकिन, इस गद्याशं में यह स्पष्ट हो जाता है कि, जो लोग यीशु पर विश्वास किया करते थे उन्हीं लोगों अगली ही आयत में यीशु का बुरी तरह विरोध किया। उन्होंने यह कहते हुए यीशु का विरोध किया कि वे कभी किसी के गुलाम नहीं रहे और वे व्यभिचार से जन्मे नहीं है(अर्थात अनैतिक शारीरिक सम्बन्धों द्वारा जन्मे)(यूहन्ना 8:33,41)। उन्होंने यीशु को यह कहते हुए गाली दी कि वह व्यभिचार से जन्मी सन्तान,तुच्छ सामरी और दुष्टात्माग्रसित है(यूहन्ना 8:48)। इस गद्यांश में हम यीशु के प्रति लोगों के व्यवहार में परिवर्तन देखते हैं। पहले तो सारे लोग यीशु के साथ साथ नज़र आ रहे थे लेकिन बाद में उनका स्वभाव पूरी तरह बदलकर उसके विरूद्ध हो गया।

(2) दिखावटी विश्वास और छुटकारा दिलाने वाले विश्वास में अन्तर।

यह गद्यांश हमें दिखाता है कि यह सम्भव है कि लोग पहले पहल तो यीशु मसीह पर "विश्वास" करें और बाद में वे विश्वास करना बन्द कर दें,फिर जाएं और वास्तव सम्भवत: यीशु मसीह के दुश्मन बन जाएं। लेकिन दिखावटी विश्वास और छुटकारा देने वाले विश्वास में बहुत बड़ा अन्तर है। दिखावटी विश्वास केवल एक मानसिक धारणा है। यह एक अस्थिर विश्वास है जो कुछ तथ्यों पर कुछ समय के लिए विश्वास करता है। दिखावटी विश्वास में किसी प्रकार का कोई समर्पण शामिल नहीं होता। लेकिन छुटकारा दिलाने वाला या बचाने वाला विश्वास(अर्थात जो विश्वास अनन्त जीवन प्रदान करता है)पूरे हृदय से यीशु मसीह के लिए समर्पित होता है। इसमें मन के विचार और हृदय के भाव, आपकी इच्छा का चुनाव और आपके व्यवहारिक कार्य शामिल होते हैं। बचाने वाले विश्वास में यीशु मसीह के प्रति सम्पूर्ण जीवन काल का समर्पण शामिल होता है।

जब कभी *"विश्वास करने के लिए" क्रिया अपूर्ण वर्तमान काल में प्रगट की गयी हो*,तो वह सच्चे बचाने वाले विश्वास को प्रदर्शित करती है। उदहारण के लिए, यूहन्ना 3:16 में लिखा है,जो लगातार(बिना रूके) उस पर विश्वास करता है,वह नाश न होगा परन्तु अनन्त जीवन पाएगा।" अपूर्ण वर्तमान काल का इस्तेमाल यूहन्ना 3:18 में भी किया गया है:" जो कोई लगातार उस में विश्वास करता है उस पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है,लेकिन जो कोई विश्वास नहीं करता, वह पहले ही दोषी ठहर चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र पर विश्वास (वह लगातार विश्वास में नहीं बना रहा)नहीं किया।(यूहन्ना 6:35,40,47;7:38;11:25-26; 12:44,46;14:12;17:20 को भी देखें)।

इसलिए हम मसीहियों के लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि दिखाने के लिए विश्वास करने वाले लोगों को उद्धार नहीं होगा, बल्कि वे तो किसी भी समय विश्वास से पीछे हट सकते हैं। दूसरी तरफ, जब लोगों में सच्चा विश्वास होगा, तो वे लगातार विश्वास करते रहेगें। क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनके जीवन में उन कामों को पूरा करेगा जो उसने प्रारम्भ किये हैं(फिलिप्पियों 1:6)!

8:31

खोज 2. सच्ची आज़ादी का मतलब।

ध्यान दें।

यूहन्ना 8:31-36 में यीशु ने कहा,"यदि तुम मेरे वचनों में बने रहोगे.....तब तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा.....यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करे तो तुम निश्चय ही स्वतन्त्र हो जाओगे।"यीशु मसीह सच्ची आज़ादी की विशेषताओं को और साथ सच्ची आज़ादी प्राप्त करने का तरीका भी बता रहे हैं।

(1) सासांरिक दृष्टिकोण से आज़ादी का अर्थ है हम अपनी मनमानी कर सकें।

जिस संसार में हम रहते हैं, उसमें बहुत से लोगों का कहना होता है कि "आज़ादी" का अर्थ होता है कि जो हम चाहें वह कर सकें। यह ऐसी आज़ादी है जो आपको अपने जहाज का कप्तान, अपनी मंजिल का मालिक और अपने प्राण का राजा बनाती है। इसका अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति को आपको बताने की जरूरत नहीं है कि आप क्या विश्वास करें या आपको क्या करना चाहिए। आपकी आज़ादी को बाधित करने के लिए कोई सीमा नहीं होनी चाहिए।

हर एक जन को अपने मन के अनुसार अपना जीवन जीने का हक होना चाहिए। लेकिन यीशु मसीह कहते हैं कि सांसारिक मानदण्डों पर प्राप्त आज़ादी वास्तव में आज़ादी नहीं है। संसार की आज़ादी वास्तव में खुद की गुलामी करना है।

(2) यहूदियों के अनुसार आज़ादी का अर्थ मूर्तिपूजा से छुटकारा है।

यहूदी इस परम्परा को बनाकर रखते हैं कि वे कभी किसी के गुलाम नहीं रहे हैं। वे मिस्र में गुलामी में बिताये वर्षों के बारे में नहीं सोच रहे थे वरन उनका मतलब है कि वे अन्यजातियों के देवी देवताओं की मूर्तियों के सामने कभी नहीं झुके। वे विश्वास करते हैं कि यहूदियों ने सदैव जीवते परमेश्वर की उपासना की है।

लेकिन,यहूदी पूरी तरह से भूल चुके है कि बीते दिनों में उन्होंने परमेश्वर का कितना विरोध किया और कितने पाप किये। और अब भी अपना जीवन पाप में बिता रहे थे। यीशु मसीह कहते हैं जिसे यहूदी आज़ादी या मुक्ति समझ रहे हैं वह आज़ादी नहीं है,क्योंकि वे तो पाप के गुलाम हैं। यीशु मूर्तिपूजा से छुटकारे या आज़ादी की बात नहीं कर रहे थे, वरन वह तो पाप से आज़ादी की बात कर रहे थे।

(3) यीशु मसीह के अनुसार आज़ादी का अर्थ पाप से आज़ादी है।

"पाप" का अर्थ केवल को गलत काम या बुरी बातों को करना नहीं है।"पाप" का अपने आप को बाइबल में प्रगट करने वाले परमेश्वर से अलग होकर स्वाधीनता की चाह करना है। "पाप " का अर्थ परमेश्वर के लक्ष्यों से चूक जाना, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना और परमेश्वर के शिक्षाओं में तोड़-मरोड़ करना। "पाप" का अर्थ उन कामों को करना है जिसके लिए परमेश्वर ने मना किया हो और जो उसने करने की आज्ञा दी हो उसे नहीं करना। देखें मैनुएल 1,अध्याय 3।

यूहन्ना 8:34 में,यीशु हमें सिखाते हैं कि जो कोई पाप करता है वह पाप का गुलाम है! इस वाक्य के द्वारा यीशु मसीह ने यहूदियों और गैर यहूदियों के बीच अन्तर को बिल्कुल खत्म कर दिया। क्योंकि हर इन्सान पाप करता है और अपने जीवन के किसी न किसी क्षेत्र में पाप का गुलाम है। वे अपने जीवन में कुछ विशेष पापों के लिए कभी मना नही कर सकते। परमेश्वर और उसके वचनों का ज्ञान होने के बावजूद लगातार पाप करते रहना यहूदियों को और स्पष्ट पापी ठहराता है। जब तक कि कोई यहूदी और गैर यहूदी व्यक्ति लगातार पाप करता है और कभी पाप करना बन्द नहीं करता था बन्द नहीं कर पाता, तो वह पाप का गुलाम है और आज़ाद तो किसी तरह नहीं है।

पाप के गुलाम होने के दो परिणाम निम्नलिखित होते हैं।

- एक गुलाम अपने पाप नामक स्वामी का कैदी होता है,और वह अपने आप को उसकी कैद से नहीं छुड़ा पाता।
- एक गुलाम का परिवार में कोई स्थाई स्थान नहीं होता, क्योंकि उसे लगातार दूसरे स्वामियों को बेचा जाता है।

पाप की गुलामी एक आशाहीन परिस्थिति होती है, क्योंकि इसमें एक व्यक्ति अपने ही पापों से अपने आप को छुड़ा नहीं पाता है। पाप की गुलामी हमसे अन्य प्रकार की गुलामी भी कराती है: एक प्रकार के पाप की गुलाती हमें अन्य दूसरे प्रकार के पाप करने के लिए मजबूर करती है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो अनैतिक यौन सम्बन्धों का गुलाम है वह झूठी आत्मिक शिक्षाओं का भी गुलाम बन जाता है। जो व्यक्ति पेटू होता है वह ज्यादा समय तक वीडियो देखने वाला गुलाम भी होता है। जो व्यक्ति मदिरा पान करने का गुलाम होता है वह भविष्य में अन्य प्रकार का नशा करने वाला और आपराधिक मानसिकता वाला व्यक्ति भी बन जाता है।

यीशु सिखाते हैं कि सच्ची आज़ादी केवल तभी प्राप्त होती है जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से यीशु के अधीन हो जाता है। अत: आज़ादी का मतलब यीशु का दास होना है! वह कहता है,"यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करें तो तुम निश्चय ही स्वतन्त्र हो जाओगे!" अत: जो कोई मसीह का दास है वह पाप की गुलामी और बन्धुवाई से स्वतन्त्र हो गया है। लेकिन जो कोई यीशु मसीह से स्वतन्त्र या अलग अवस्था में रहना चाहता है,वह पाप का गुलाम बना रहता है! जो कोई इस संसार की रीति से बिना किसी सीमा या दायरे के स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहता है, वह अपने पाप की सीमा का ही गुलाम बना रहता है।

अत: आज़ादी या स्वतन्त्रता का अर्थ यह नहीं है कि आप अपनी मनमानी कर सको, मगर यह एक ऐसी योग्यता है जिसके द्वारा आप उन कामों को कर सको जिसे आपको करना चाहिए। आज़ादी का अर्थ वास्तव में वह कर पाना है जो बाइबल का परमेश्वर आपसे करवाना चाहता है। अत: आज़ादी किसी प्रकार के धर्म या मनन या योगा जैसी धार्मिक क्रियाओं को करने से प्राप्त नहीं हो सकती, क्योंकि ये धर्म या धार्मिक क्रियाएं समस्या (पाप) का समाधान नहीं करतीं(रोमियों 3:23) और न ही ये समस्या के परिणामों (जिसे जीवते परमेश्वर से अलगाव कहा जाता है)का उपचार करती हैं (यशायाह 59:1-2)। वे इन दो समस्याओं से नहीं निपटारा *नहीं कर सकते* । सच्ची आज़ादी यीशु के बिना मिल ही नहीं सकती,क्योंकि यीशु मसीह की केवल पापों के लिए मरा(1पतरस 2:24) और केवल यीशु मसीह ही लोगों का परमेश्वर पिता के साथ पुन: सम्बन्ध जोड़ता है।(1पतरस 3:18)। सच्ची आज़ादी केवल यीशु के साथ एक होने से ही प्राप्त होती है। केवल यीशु मसीह के साथ एक हो जाने पर ही आप उन्हीं कामों को करना चाहते हैं और कर पाते हैं,जो आपको करना चाहिए। यदि पुत्र आपको स्वतन्त्र करे तो आप निश्चय ही स्वतन्त्र हो जाएंगे।

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 8:1-59 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

8:34

प्रश्न 1. मसीहियों को एक व्यभिचारी के लिए मृत्यु दण्ड को किस तरह से देखना चाहिए?

ध्यान दें।

व्यवभिचार वास्तव में एक गम्भीर अपराध है। पुराने नियम में व्यभिचार में पकड़े गये स्त्री व पुरूष दोनों को ही मार दिया जाता था। लेकिन यीशु मसीह के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में मरने के बाद, व्यवस्था (इस्राएल के कानून को) की मांग को यीशु द्वारा पूरा कर दिया (मत्ती 5:17)तथा बदल दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति सच में पश्चाताप करके यीशु मसीह के सामने अपने पापों का अंगीकार करता है, तो यीशु मसीह उसको उसकी सारी अधार्मिकता क्षमा करते हैं(1यूहनना 1:9)।

लेकिन, आज भी कुछ ऐसे धर्म के ठेकेदार और शिक्षक हैं जो केवल व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों की ही खोज में रहते हैं(जिसमें उनके खुद के बनाये नियम भी शामिल होते हैं) और उन्हें मारने में ही रूचि रखते हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि वे उद्धार के निमित्त यीशु मसीह द्वारा पूरे किये कार्य और नये नियम में प्राप्त अनुग्रह और क्षमा को नहीं जानते हैं। वे आज भी "व्यवस्था के अधीन"(रोमियों 6:14) जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे न केवल खुद परमेश्वर की व्यवस्था को पूर्ण करने में सफल हो जाते हैं बल्कि जिन्हें वे व्यवस्था का अपराधी मानते हैं उन्हें मारकर परमेश्वर को भी न्यायी के पद से प्रतिस्थापित कर देते हैं। नये नियम में केवल सरकार को ही मृत्यु दण्ड देने का अधिकार है(रोमियों 13:4; उत्पत्ति 9:6)।

मसीहियों को पुराने नियम की व्यवस्था का अर्थ सदैव यीशु मसीह के पहले आगमन तथा नये नियम की शिक्षाओं के प्रकाश में निकालना चाहिए।

8:21-24

प्रश्न 2.जब यीशु ने कहा कि यदि लोग यीशु पर विश्वास न करें तो वे अपने पापों में मर जाएंगे?

ध्यान दें।

यूहन्ना 8:24 में यीशु ने कहा,"क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं "वही हूँ" तो अपने पापों में मरोगे। यहां पर "मैं वहीं हूँ "का अर्थ है: "मैं वहीं हूँ जो मैं होने का दावा करता हूँ"।

यह वाक्य पुराने नियम में पाये जाने वाले निम्नलिखित वाक्यों का हवाला देता है: निर्गमन 3:14 में परमेश्वर यहोवा कहते हैं, "मैं जो हूँ सो हूँ" अर्थात "मैं था, मैं हूँ और मैं वही रहूँगा जिस नाम से मैंने अपने आप को प्रगट किया है।" व्यवस्थाविवरण 32:39 में परमेश्वर कहते हैं,"मैं ही वह हूँ! और मेरे तुल्य कोई देवता नहीं है"। और यशायाह 43:10 में परमेश्वर कहते हैं,"तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो...कि तुम समझ कर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहिले कोई ईश्वर न हुआ और न मेर बाद कोई होगा।" दूसरे धर्मों के देवी देवता परमेश्वर नहीं हैं। वे तो केवल धार्मिक लोगों के अविष्कार है।

इसी प्रकार की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल यूहन्ना रचित सुसमाचार में भी किया गया है। यीशु कहते हैं,"मैं वही हूँ"(यूहन्ना 4:26)। जन्म का अन्धा कहता है, उसने कहा कि "मैं वही हूँ"(यह वही जन्म का अन्धा था जो बैठकर भीख मांगा करता था) (यूहन्ना 9:9)। यीशु कहते हैं," मैं हूँ"(यीशु नासरी)(यूहन्ना 18:5-8)। यूहन्ना 8:24 में,यीशु कहते हैं, "मैं वही हूँ" (जो मैंने होने का दावा किया है): अर्थात वह जो पिता के द्वारा भेजा गया, जो स्वर्ग से उतरा है, मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर का इकलौता पुत्र, जो पिता के तुल्य है, जो अपने आप में जीवन रखता है, और सम्पूर्ण धर्मशास्त्र की परिपूर्णता है। मैं जीवन की रोटी हूँ(यूहन्ना 6:35),मैं जगत की ज्योति हूँ(8:12),मैं भेड़ों का द्वार मैं हूँ (यूहन्ना 10:7), अच्छा चरवाहा मैं हूँ (यूहन्ना 10:11), पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 11:25-26), मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ (यूहन्ना 14:6),सच्ची दाखलता मैं हूँ(यूहन्ना 15:1)।

यीशु ने निम्नलिखित बातों का भी दावा किया: "जो मुझ पर विश्वास करता है,वह मुझ पर नहीं वरन मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है। और जो मुझे देखता है वह मेरे भेजने वाले को देखता है"(यूहन्ना 12:44-45)।

कोई भी जन यीशु के साथ निष्क्रिय या उदासीन अवस्था में नहीं रह सकता। या तो आप यीशु पर विश्वास करते हैं या नहीं करते। जो कोई यीशु के बारे में उन सारी बातों पर विश्वास नहीं करता जिनका उसने खुद होने का दावा किया है, वह पापों में मरेगा। मरने का अर्थ यहां पर केवल शारीरिक मृत्यु से नहीं,वरन अनन्त मृत्यु अर्थात नरक में डाले जाने से है। जो कोई यीशु को अस्वीकार करेगा उसे शारीरिक तौर पर मरने पर शान्ति या विश्राम नहीं मिलेगा, वरन वह केवल अन्धकारमय निराशा का भागीदारी होगा। और जिसे वह अस्वीकार करता है वह उसकी निराशाजनक परिस्थिति में उसकी सहायता करने के लिए उपस्थिति नहीं होगा। वह केवल परमेश्वर के क्रोध का सामना करेगा और अनन्तमृत्यु,आग की झील या नरक का भागीदार होगा। वह उस स्थान में कभी नहीं प्रवेश कर सकता जिसमें यीशु जा रहे हैं अर्थात फिरदौस या स्वर्ग जो परमेश्वर पिता का निवास स्थान है(इब्रानियों 12:22-24)।

पद 21 में यीशु को अस्वीकार करने वाले यहूदियों के पाप (एकवचन) को सामूहिक रूप में देखा गया है और पद 24 में यहूदियों के पापों(बहुवचन)को अलग करके देखा गया है। यदि कोई यीशु मसीह को नहीं "जानता" अर्थात "उसका यीशु मसीह के साथ कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं है", तो वह वास्तव में एकमात्र विद्यमान परमेश्वर को नहीं जानता। यदि कोई यीशु की बातों या दावों पर विश्वास नहीं करता, वह परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर ने ही यीशु को भेजा है। जो कोई यीशु को परमेश्वर का पुत्र नहीं मानता वह नरक का भागीदार होगा।

8:37-45

प्रश्न 3. अब्राहम की सन्तान वास्तव में कौन हैं?

ध्यान दें।

(1) यहूदी केवल अब्राहम के वंश में पैदा होने के कारण उसकी सन्तान नहीं ठहरते।

पद 37 में, यीशु इस बात को स्वीकार करते हैं कि यहूदी वास्तव में अब्राहम के वंशज हैं। लेकिन 39 पद में, वह कहता है कि, अगर वे सच में अब्राहम की सन्तान होते तो वे भी वैसे ही काम करते जैसे अब्राहम ने किये थे। अब्राहम ने परमेश्वर के दूतों का स्वागत किया, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और पूरी तरह से भरोसा किया कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है वह उसे ज़रूर पूरा करेगा। अन्त में 56 पद के अनुसार अब्राहम आने वाले मसीह अर्थात यीशु मसीह के दिन को देखने के लिए आनन्दित भी हुआ(उत्पत्ति 12:3; 22:18)। लेकिन यहूदियों ने वैसे काम नहीं किये जैसे अब्राहम ने किये थे। इसके बजाय, उन्होंने मसीह का विरोध किया, उसके वचनों का इनकार किया और अन्त में उसे घात करने के लिए षड़यन्त्र बनाया(मत्ती 12:14)!

यीशु ने निष्कर्ष देते हुए कहा कि यहूदी धार्मिक अगुवे और शिक्षक अर्थात सदूकी और फरीसी लोग अब्राहम की सन्तान नहीं हैं, बलिक शैतान की सन्तान हैं। शैतान प्रारम्भ से(फिरदौस से) ही झूठ का तथा हत्या करने वालों को पिता है। और यहूदी अगुवे भी ठीक वैसे ही झूठ बोलने वाले व हत्यारे थे। इस तरह शैतान ही सही मायनों में उनका पिता ठहरा। उनका स्वभाव, बातें और उनके काम दिखाते हैं कि सच में उनका पिता कौन है!

(2) संसार के सभी देशों में पाये जाने वाले मसीही लोग (जिसमें यहूदी राष्ट्र के लोग भी शामिल हैं) अब्राहम की सच्ची सन्तानें हैं।

नामधारी मसीही अब्राहम की सच्ची सन्तानें नहीं हैं, बल्कि वे नया जन्म पाये हुए मसीही हैं। प्रेरित पौलुस शिक्षा देता है कि अब्राहम सभी विश्वास करने वालों का पिता है(मसीही)(रोमियों 4:11-16)। वह हमें शिक्षा देता है परमेश्वर द्वारा आशीषें और प्रतिज्ञाएं अब्राहम की शारीरिक सन्तानों अर्थात (यहूदियों)[1]को नहीं दी गयी थीं, वरन अब्राहम के वंश अर्थात "बीज" (इब्रानियों: ज़ेरा), अर्थात: यीशु मसीह (गलातियों 3:14-29)!

अत: जो कोई यीशु मसीह के दावों पर विश्वास करते हैं [2]वे अब्राहम कें आत्मिक पुत्र है। अब्राहम के वंश में पैदा होने के दावे से कोई फायदा नहीं है। क्योंकि जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह अब्राहम की आत्मिक सन्तान है और वह भी अब्राहम के जैसे काम करे: : वह यीशु मसीह पर विश्वास करेगा, उसकी आज्ञाओं को मानेगा और यीशु मसीह में आनन्दित होगा।

8:51

प्रश्न 4. जब यीशु मसीह ने कहा,"यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।" का क्या अर्थ था?

ध्यान दें।

"मेरे वचनों पर चलेगा" का अर्थ है: यीशु मसीह के वचनों पर विश्वास करना और उसे स्वीकार करना, वरन वचन इस तरह से मज़बूती से पकड़े रहना कि कोई उसे उस वचन या आज्ञा का पालन करने से न रोक सके। इसका अर्थ केवल एक बार काम करने से नहीं है: उदारहण के लिए,"अपने विश्वास का केवल एक बार अंगीकार करना नहीं है"।

इस अर्थ आज्ञा का लगातार पालन करने से है। केवल एक बार प्रयास करने से अर्थात "विश्वास करना कि परमेश्वर एक है" या "यह कहना कि यीशु एक नबी है" यीशु को प्रभावित नहीं करता। क्योंकि दुष्टआत्माएं भी यह विश्वास करती और कांपती हैं (याकूब 2:19), क्योंकि वे जानती हैं कि वे नरक में जाएगीं(मत्ती 25:41)! यीशु मसीह ने लोगों में केवल तभी रूचि ली जब उन्होंने परमेश्वर के वचनों प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए लगातार अपने आप को समर्पित किया(मत्ती 7:21-27)। यीशु ने यह प्रतिज्ञा की है कि जो उसके वचनों पर चलेगा वह कभी मृत्यु को न देखेगा। यहूदी लोग एक बार फिर से यह समझने में असफल हो गये कि यीशु मसीह

उनसे *आत्मिक मृत्यु* के बारे में बातचीत कर रहे थे। उन्होंने हमेशा यीशु द्वारा कही गयी बातों का शाब्दिक अर्थ निकालने का प्रयास किया और इस कारण वे कभी यीशु मसीह की शिक्षाओं को समझ न सके। यहूदी लोग केवल शारीरिक मृत्यु के बारे में ही विचार कर रहे थे। लेकिन यीशु परमेश्वर के साथ रिश्ता खत्म हो जाने की बात कर रहे थे। वह परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी देखरेख से अलग होने तथा सदा के लिए परमेश्वर के क्रोध तथा उसके दण्ड का अनुभव करने की बात कर रहा था(2 थिस्लुनिकियों 1:8-9)। यीशु मसीह ने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई उसके वचनों पर चलता है वह कभी भी परमेश्वर की सुन्दर उपस्थिति और देखदेख से अलग नहीं होगा और न ही उसे परमेश्वर के धार्मिक व पवित्र क्रोध व दण्ड का सामना नहीं करना पड़ेगा।

8:56

प्रश्न 5. अब्राहम ने वास्तव में कैसे यीशु मसीह के दिनों को देख लिया था?

ध्यान दें।

यूहन्ना 8:56 में, यीशु मसीह कहते हैं कि, "तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा में मगन था; और उसने देखा

और आनन्द किया। इसका वास्तविक अर्थ यह नहीं है कि अब्राहम ने यीशु मसीह को शारीरिक आंखों से देख लिया(आप
इसके साथ साथ उत्पत्ति 18:1-15 को भी देखें), लेकिन उसने यीशु मसीह के दिनों को देख लिया। जब परमेश्वर ने अब्राहम
को एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा की, तो वह बहुत आनन्दित हुआ। उसने प्रतिज्ञा प्राप्त करने के बाद भी पच्चीस वर्षों तक प्रतीक्षा की और तब जाकर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम "इसहाक" रखा,जिसका नाम था "हँसी" (उत्पत्ति 21:5-6)।
उत्पत्ति12:3,7 और22:18, में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि"और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी"। इस कारण वह न केवल अपने पुत्र (इसहाक) के जन्म पर अति प्रसन्न हुआ, वरन वह उसमें विद्यमान अपने वंशजों अर्थात बीज(गलातियों 3:16) को देखकर भी प्रसन्न व आनन्दि हुआ जिसमें होकर पृथ्वी की सारी जातियां आशीषित होने वाली थीं। अब्राहम इस बात को समझ गया कि वह वंश भविष्य में मसीह का वंश, मानवजाति की आशा, और संसार का उद्धारकर्ता होगा! इब्रानियों 11:13 में लिखा है कि पुराने नियम में विश्वास करने वालों ने प्रतिज्ञा के बीच या वंश को अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देखा। उन्होंने वह प्राप्त नहीं किया जिसकी प्रतिज्ञा की गयी थी वरन उन्होंने उस प्रतिज्ञा की गयी वस्तु को केवल दूर से ही देखा था(अर्थात उद्धार के इतिहास से उन्होंने उसे केवल अपनी आत्मिक आंखों से ही देखा था। अत: इस नज़रिये से अब्राहम ने "यीशु मसीह के दिन को देखा"। उसने यीशु मसीह(बीज या वंश)(गलातियों 3:16) को विश्वास के द्वारा देखा और उद्धार के इतिहास के प्रारम्भ में ही उसका स्वागत किया। अब्राहम, यीशु के आगमन को देखकर अति आनन्दित हुआ।

कदम 4. अनुप्रयोग

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 8:1-59 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

---

1. यहूदी, नामधारी मसीही और मुसलमान लोग अब्राहम की सन्तान होने का दावा करते हैं।
2. यहूदियों के साथ, ऐसे मसीही व मुसलमान जो वास्तव में बाइबल में पाये जाने वाले यीशु मसीह और उसकी बातों पर विश्वास करते हैं ।

1. यूहन्ना 8:1-59 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

8:6. "अपनी उंगलियों से ज़मीन पर लिखने लगा"। बहुत से ऐसे लोग हैं जो केवल आपको फँसाने और आप पर धार्मिक व सामाजिक अधिकारियों सामने दोष लगाने के लिए ही आपसे प्रश्न करते हैं। आपको उनके सभी सवालों का जवाब देने की कोई ज़रूरत नहीं है। कई बार शामोशी सबसे बेहतर उत्तर होती है।

8:7 लेकिल कभी कभी जांच करने वाले उत्तर देना अच्छा रहता है। यीशु ने उनसे गहन जांच करने या तह तक जाने वाला वाक्य कहा,"तुम में से जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे"। और किसी ने उस स्त्री पर पत्थर नहीं मारा, जो इस बात का प्रमाण था किस उन सभी लोगों ने अपने जीवन में कभी न कभी व्यभिचार करने का पाप किया था(अर्थात उनके विचारों, बातों या कामों के द्वारा)। मत्ती 5:27-30 को पढ़ें। किसी दूसरे व्यक्ति की आखों से तिनका निकालने से पहले अपनी आंख से लट्ठा बाहर निकाल ले (लूका 6:41-42)।

8:11. न मान यीशु द्वारा पापों से क्षमा प्राप्त करने के बाद, अपने पाप मय जीवन को छोड़ दे। "चली जा और फिर पाप करना!" नीतिवचन 28:13। जो अपने अपराध छिपा रखता है उसका कार्य सफल नहीं होता,परन्तु जो उनको लेता है और छोड़ भी देता है उस पर दया की जायेगी।

8:12. यीशु के पीछे हो लें और आपके पास सदैव उद्धार,सन्तुष्टि, नवीनीकरण और आशीषों का प्रकाश होगा।

8:15. न्याय न करों। किसी का न्याय करना यीशु मसीह का काम है(यूहन्ना 5:22)। यीशु मसीह संसार को उसके पापों के कारण दण्ड देने के लिए नहीं आए, क्योंकि संसार तो पहले से ही दोषी ठहर चुका है। परन्तु यीशु इस जगत के पापियों और खोये हुओं का उद्धार करने के लिए आये(यूहन्ना 3:17-18)। हालांकि यीशु के धार्मिक अगुवों और शिक्षकों के बारे में बहुत कुछ कह सकते तथा उनका न्याय कर सकते हैं(यूहन्ना 8:26),लेकिन वह मानवीय आधार पर उनका न्याय नहीं करता है(यूहन्ना 8:15;मत्ती 7:1-2)। यीशु ने उन लोगों की निन्दा की जो सोचते थे कि उन्होंने कोई पाप नहीं किया और यह कि वे सब धर्मी हैं(यूहन्ना 9:39)।

8:31. यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन करें, जिससे यह प्रगट हो जाएगा कि आप यीशु मसीह के चेले हैं।

8:32. यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन करें, जिससे आप पूरी तरह से स्वतन्त्र हो जाएगें।

8:42. यीशु मसीह से प्रेम करें और इससे प्रगट हो जाएगा कि परमेश्वर आपका पिता है।

8:44. जो लोग हमेशा झूठ का प्रचार करते (यीशु मसीह,बाइबल और मसीहियों के बारे में) हैं और लोगों की हत्या करते हैं (कातिल के समान, युद्ध अपराधी के रूप में, जिहादी बनकर, नशीले पदार्थो इत्यादि के द्वारा) वे अपने पिता शैतान की रीति पर चलते हैं। निश्चय ही बाइबल में प्रगट परमेश्वर पिता उनका पिता नहीं है।

2. यूहन्ना 8:1-59 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं सुनिश्चित करना चाहता हूँ मुझमें अटल विश्वास है केवल दिखावटी विश्वास नहीं। जब कभी मैं बाइबल को पढ़ता या उसका अध्ययन करता हूँ, तो मैं सुनिश्चित करता हूँ कि मैं इन शिक्षाओं को केवल अपने दिमागी तौर पर ही न समझूँ, वरन अपना जीवन इन शिक्षाओं के आधार पर व्यतीत करूं। मैं लगातार प्रार्थना करना चाहता हूँ कि पवित्र आत्मा मुझे सम्पूर्ण हृदय से बाइबल की शिक्षाओं के प्रति आज्ञाकारी और समर्पित बनाए।

मैं संसार की रीति पर "दिखावटी आज़ादी" को नहीं वरने सच्ची आज़ादी को प्राप्त करना चाहता हूँ। मेरे आस पास रहने वाले लोग जिस प्रकार की आज़ादी होने का दावा करते हैं उसमें कोई सीमा नहीं होती। लेकिन मसीह में आज़ादी उस काम को ज़रूर करती है जिसे करना चाहिए। सच्ची आज़ादी परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं का आदर करती है।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 8:1-59 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 8 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2थिस्लुनिकियों 1-3 अध्याय** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। **(8) यूहन्ना 7:38।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।